कंचन कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा।

कर्मभूमि उपन्यास में कथोपकथन या वार्तालाप।

कथोपकथन का संबंध पात्रों तथा कथावस्तु दोनों से है। वार्तालाप प्रायः पात्रों के व्यक्तित्व के उद्घाटन तथा कथाक्रम के विकास के लिए होता है। कथोपकथन उपन्यास को अग्रसर नहीं करता या चरित्र पर प्रकाश नहीं डालता। कथोपकथन परिस्थिति और पात्र के बौद्धिक विकास के अनुकूल होता है। मुंशी प्रेमचन्द के 'कर्मभूमि' के पात्र सजीव एवं जिन्दादिल है। इसे हम एक उदाहरण के द्वारा परिलक्षित कर सकते है।

"सुखदा ने उसे गले से लगाकर सजल शब्दों में कहा — क्यों रोती हो बीबी, बीच-बीच में मुलाकात तो होती ही रहेगी। जेल में मुझसे मिलने आना, खूब अच्छी-अच्छी चीजें बनाकर लाना दो-चार महीनों में तो मैं फिर आऊँगी।

नैना ने जैसे डूबती हुई नाव पर से कहा — मैं ऐसी अभागिन हूँ कि आप डूबी ही थी, तुम्हें भी ले डूबी।

सुखदा ने आश्चर्य से उनके मुँह की ओर देखकर कहा — यह तुम क्या कह रही हो बीबी, क्या तुमने पुलिस बुलायी है। नैना ने ग्लानि से भरे कण्ठ से कहा — यह पत्थर की हवेली वालों का कुचक्र है। मैं किसी को गालियाँ नहीं देती, पर उनका किया

उनके आगे आवेगा। जिस आदमी के लिए मुह से भी एक आशीर्वाद न निकलता हो, उसका जीना वृथा है।

सुखदा ने उदास होकर कहा — उनका इसमें क्या दोष है बीबी। यह सब हमारे समाज का, हम सबों का दोष है। अच्छा, आओ, अब विदा हो जायँ। वादा करो, मेरे जाने पर रोओगी नहीं।

मैना ने उसके गले से लिपटकर सूजी हुई लाल आंखो से मुस्कुराकर कहा — नहीं रोऊंगी भाभी।

"अगर मैंने सुना कि तुम रो रही हो, तो मैं अपनी सजा बढ़ा दूंगी"।

"भैया को यह समचार देना होगा"।

'तुम्हारी जैसी कोई आदमी भेजा गया या नहीं,'

'उन्हें बुलाने से और देर ही होती। घण्टों नहीं छोड़ते।'

उपन्यास कर्मभूमि में कथोपकथन पात्रों के अनुसार है। मुंशी प्रेमचन्द कथोपकथन के जरिये बड़ी साफगोई के साथ अपनी बाते कह जाते हैं। जिस अंजाम तक अपने आदर्श को वे पहुँचाना चाहते हैं उसके लिए अपने आदर्श पात्रों को आगे कर देते है जैसे —

अमर ने सलीम का गरदन पकड़कर कहा — "तुमने मुझे बदनाम किया होगा।"

सलीम बोला तुम्हें तुम्हारी हरकतें बदनाम

कर रही है, मैं क्यों करने लगा।

गजनवी ने बाँकेपन के साथ कहा — तुम्हारी गजब की दिलेर औरत है भई। आजकल म्युनिसिपेलिटी से उनकी जोर — ~~तुम्हारी गजब की दिलेर औरत है भई।~~ आजमाई है और मुझे यकीन है, बोर्ड को झुकना पड़ेगा। अगर भई, मेरी बीवी ऐसी होती, तो मैं फकीर हो जाता। वल्लाह।

अमर ने हँसकर कहा — क्यों आपको तो और खुश होना चाहिए था।

गजनवी — जी हाँ। वह जनाब का दिल ही जानता होगा।

सलीम — उन्हीं के खौफ से तो यह भागे हुए हैं।

गजनवी — उन्हें यहाँ कोई जलसा करके बुलाना चाहिए।

सलीम — क्यों, बैठे - बिठाये जहमत मोल लीजियेगा। वह आयी। और शहर में आग लगी, हमें बंगला से निकलकर पड़ा।

गजनवी — अजी यह तो एक दिन होना ही है। यह अमीरों की हुकूमत अब थोड़े दिनों की मेहमान है। इस मुल्क में अंग्रेजों का राज है इसलिए देश में जो अमीर है और जो कुदरती तौर पर अमीरों की तरफ खड़े होते हैं, वह भी गरीबों की तरह खुश होने में खुश है क्योंकि गरीबों के साथ उन्हें

कम से कम इज्जत तो मिलेगी, उधर तो यह डौल भी नहीं है। मैं अपने को इसी जमात में समझता हूँ।"

Scanned with CamScanner